

## प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक संगठन का विश्लेषणात्मक अध्ययन (तक्षशिला, नालंदा और वल्लभी के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. रानी दुबे<sup>1</sup>, आशुतोष उपाध्याय<sup>2</sup>

<sup>1</sup> शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत

<sup>2</sup> शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत

### सारांश

प्राचीन काल से ही भारतीय समझ में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती चली आ रही है। यह लंबे समय से माना जाता रहा है कि शिक्षा ही मानव जाति की आध्यात्मिक और बौद्धिक उन्नति का एकमात्र मार्ग है। यह सत्य है कि शिक्षा से जानकारी प्राप्त होती है और शास्त्र तथा ज्ञान के परिणामस्वरूप मनुष्य अधिक ज्ञानवान बनता है और इस ज्ञान का उपयोग वह अपने व्यवहारिक जीवन में करता है स प्राप्त ज्ञान के अभ्यास से मनुष्य अपनी कला में पारंगत हो जाता है स शिक्षा के फलस्वरूप ही लोग सभ्य एवं सुसंस्कृत बनते हैं। संस्कृत साहित्य के नीति श्लोक में कहा गया है कि, 'विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्' अर्थात् विद्या, या ज्ञान, विनम्रता प्रदान करती है, विनम्रता योग्यता प्रदान करती है, और यह योग्यता ही धन प्रदान करती है स शिक्षा को औपचारिक व अनौपचारिक दो तरीकों से दिया जाता है, प्राचीन समय में भारत के औपचारिक शिक्षा के केंद्र दो प्रकार से होते थे, अर्थात् गुरुकुल या वैदिक विद्यालय प्रणाली और मठ या विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली। गुरुकुल मुख्यतः प्राथमिक शिक्षा का केंद्र था जो बाद में तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय के रूप में भी विकसित हुआ। लेकिन महाविहारों को संस्थागत केंद्र बनाया गया। प्राचीन भारतीय शिक्षा मुख्यतः उच्च शिक्षा पर केन्द्रित है। प्राचीन भारत के प्रमुख विश्वविद्यालय नालंदा, तक्षशिला वल्लभी विक्रमशिला ओदंतपुरी इत्यादि थे। जो प्राचीन भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में सम्पूर्ण विश्व में अपने शिक्षा पद्धति सम्बंधित प्रतिमान में विख्यात थे। इन केंद्रों में रचनात्मकता और बौद्धिक स्वतंत्रता के युग को प्रतिबिंबित किया। प्राकृतिक और सांसारिक प्रसंगों को समझने की निरंतर जिज्ञासा ने प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को उसके चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया, जो इसके संगठित या विश्वविद्यालयीय शैक्षिक केंद्रों में परिलक्षित होता था। प्रस्तुत शोध आलेख में प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय तक्षशिला नालंदा एवं वल्लभी विश्वविद्यालयों के शैक्षिक संगठन का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें प्रमुख विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक संगठन जैसे शिक्षा का स्वरूप, विद्यालय का स्वरूप, पाठ्यक्रम, आवासीय व्यवस्था, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, प्राचीन शासन व्यवस्था पर शिक्षा का प्रभाव तथा पाठ्यक्रम एवं पाठ्यक्रम से इतर गतिविधियों के प्रासंगिकता से संदर्भित विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

**मूल शब्द:** प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय तक्षशिला, नालंदा और वल्लभी, शैक्षिक प्रणाली एवं संगठन

किसी राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रमुख तत्वों में से एक शिक्षा है। इसे वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों और समय की कमी को प्रतिबिंबित करने के लिए अद्यतन किया जाना चाहिए। यह मानवता के सामने आने वाली नैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक चुनौतियों पर आलोचनात्मक चिंतन का अवसर प्रदान करता है। शिक्षा एक उपकरण है जो लोगों को जानकारी, ज्ञान कौशल और उनके परिवारों, समुदायों और देश के प्रति उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों को समझने की क्षमता प्रदान करती है। यह किसी के दृष्टिकोण और दृष्टि के क्षेत्र को व्यापक बनाता है। किसी व्यक्ति की शैक्षिक उपलब्धि उसके जीवन की सबसे अधिक परिभाषित विशेषताओं में से एक है। यह व्यक्ति को साक्षर बनने, घटनाओं का तर्कसंगत और विचारशील विश्लेषण करने और समाज और स्वयं की उन्नति के लिए ज्ञान को व्यापक रूप से लागू करने में सक्षम बनाता है। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार, शिक्षा जीवन जीने का एक तरीका है। हमारे व्यक्तित्व को आकार देने का एक महत्वपूर्ण साधन है ताकि हम अपने विचारों और कार्यों के लिए दिशा चुन सकें और जीवन में अपने लक्ष्यों और सपनों को पूरा कर सकें।

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में (सा विद्या या विमुक्तये) शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाती है। यह व्यक्ति को नकारात्मक झुकावों और उनके वास्तविक 'स्व' के बारे में ज्ञान की कमी से मुक्त करता है। भारतीय परंपरा मानती है कि 'विद्या' या ज्ञान 'अविद्या' या अज्ञान के विपरीत है, और इसे पूरी तरह से महसूस करने के लिए, 'आत्म-विद्या' या स्वयं का ज्ञान प्राप्त करना होगा। प्राचीन

काल में भी शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। सिन्धु घाटी सभ्यता के दौरान शिक्षा का कोई प्रमाण हमारे पास नहीं है लेकिन फिर भी लेआउट प्लान, जल निकासी व्यवस्था को देखने पर यह समझ आता है कि लोग बहुत बुद्धिमान थे। संपूर्ण वैदिक सभ्यता में शिक्षा मौखिक रूप से प्रदान की जाती थी। मूल रूप से प्रत्येक वैदिक पाठ व्यक्तियों के बीच मौखिक रूप से पारित किया गया था। ऋग्वेद की रचना 1300-1500 ईसा पूर्व तक नहीं हुई थी। वैदिक युग में शिक्षा की प्राथमिक भाषा के रूप में संस्कृत का उपयोग किया जाता था, लेकिन बौद्ध शिक्षा ने पाली को इसके माध्यम के रूप में अपनाया। भारत में संगठित शिक्षा का एक लंबा इतिहास रहा है। प्राचीन भारत में आधिकारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रणालियाँ थीं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली यकीनन सबसे सुस्थापित दृष्टिकोण है, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक पहलुओं को शामिल करते हुए समग्र मानव विकास के उच्चतम आदर्शों पर आधारित है। गुरुकुल ऐतिहासिक हिंदू निजी स्कूल थे जो आम तौर पर अपने शिक्षकों के घरों या उनके धार्मिक समुदायों में स्थित होते थे। हालाँकि शिक्षा मुफ्त थी, लेकिन संपन्न घरों के छात्रों को अपनी पढ़ाई पूरी होने के बाद गुरुदक्षिणा, एक उदार दान देना पड़ता था। गुरुकुल में, शिक्षक पवित्र ग्रंथों, लेखन, इतिहास, धर्म दर्शन, सिद्धांत दर्शन, चिकित्सा और अन्य विषयों पर ज्ञान प्रदान करते थे। इसी प्रकार, घर में, अभयारण्यों, पाठशालाओं, टोलों, चतुष्पदियों और गुरुकुलों में विशेष शिक्षा दी जाती थी। लोग घरों और कस्बों में रहते थे। शिक्षा के निजी स्थानों को गुरुकुल या 'आश्रम' के रूप में जाना जाता था। इनमें से एक बड़े हिस्से पर

ऋषियों के नाम अंकित हैं। कई छात्र 'गुरुकुल' में एक साथ पढ़ते थे, जो शांतिपूर्ण वातावरण के साथ जंगली इलाकों में स्थापित किए गए थे। प्रारंभिक वैदिक महिलाओं की भी शिक्षा में रुचि थी। शिष्यों और गुरु को जंगल के समान शांत वातावरण में स्थापित किया गया था। अपने लंबे प्रवास के कारण छात्र गुरुकुल को दूसरे घर के रूप में देखते हैं। उस समय के दौरान शिष्य और उनके स्वामी दिन-प्रतिदिन के जीवन में एक-दूसरे की सहायता करते थे। पूर्ण समझ हासिल करना, अनुशासित जीवन जीना और अपनी क्षमता को पहचानना महत्वपूर्ण उद्देश्य थे। एक विस्तारित अवधि तक छात्र अपने घरों से दूर रहते थे गुरुकुल में अमीर से लेकर गरीब घरों के छात्र पढ़ते थे। आश्रम में प्रत्येक विद्यार्थी का जीवन अत्यंत सरल रहता था और धर्म और नैतिक मानक मानदंड, विनियम और अनुशासन निर्धारित करते हैं। प्रत्येक नियम उल्लंघन को एक अपराध के रूप में देखा गया जिसमें सुधार की आवश्यकता थी। भारत की पारंपरिक शिक्षा प्रणाली पर आलोचनात्मक सोच की प्रवृत्ति बढ़ रही है। पुरातन काल की शिक्षा प्रणाली महत्वपूर्ण थी। प्राचीन भारत में शिक्षा के प्रति बहुत सम्मान और उपयुक्त अवसर था।

### ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

तक्षशिला दुनिया के पहले शैक्षिक केंद्रों में से एक था, जिसे तक्षशिला के नाम से भी जाना जाता है। इसका इतिहास वैदिक युग में शुरू हुआ, जो छठी शताब्दी ईसा पूर्व था। तक्षशिला एक संपन्न महानगर और कई संस्कृतियों और विचारों का मिश्रण उस क्षेत्र में स्थित था जो अब समकालीन पाकिस्तान का एक हिस्सा है। रेशम मार्ग के किनारे इसके लाभप्रद स्थान ने भारत, मध्य एशिया और शेष विश्व के बीच व्यापार को बढ़ावा दिया। 'तक्षशिला' शहर की स्थापना 5वीं से 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच हुई थी। यह पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद से लगभग 32 किमी उत्तर पश्चिम में स्थित है। यह प्रसिद्ध शहर भारतीय उपमहाद्वीप और मध्य एशिया में सिंधु नदी के पूर्वी तट पर स्थित थी (अर्थात् तीन महान व्यापार मार्गों के चौराहे पर एक पूर्वी भारत से, दूसरा पश्चिमी एशिया से और तीसरा कश्मीर और मध्य एशिया से)। इस स्थिति ने प्राचीन काल में तक्षशिला शहर को समृद्धि अर्जित की थी। इसका अर्थ 'कटे हुए पथरों का शहर' या 'तक्ष की चट्टान' है। यूनानी लेखकों ने शहर का नाम 'तक्षशिला' किया है। इसे इतिहास के पन्ने में एक संस्कृत ग्रन्थ 'वायु पुराण' द्वारा परिभाषित किया गया है; बौद्ध साहित्य 'जातक कथाएँ' द्वारा, हिंदू महाकाव्य, रामायण द्वारा; एक अन्य हिंदू महाकाव्य, महाभारत द्वारा और अंत में लगभग 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के तीर्थयात्रियों द्वारा। हिंदू संस्कृत ग्रंथ 'वायु पुराण' के चित्रण के अनुसार, 'तक्षशिला' राज्य की राजधानी थी, 'गांधार' ने खुद को एक महान शिक्षण केंद्र के रूप में स्थापित किया। फारसी राजा डेरियस प्रथम ने शिलालेखों में गांधार को 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में एक प्रांत के रूप में वर्णित किया था, और गांधार की राजधानी तक्षशिला पर एक शताब्दी से अधिक समय तक अचमेनियन (फारसी) का शासन था। बौद्ध 'जातक कथाएँ', जिनकी रचना पाँचवीं शताब्दी में श्रीलंका में की गई थी और जिनमें तक्षशिला का विस्तृत चित्रण शामिल है, वे भी 'वायु पुराण' के अनुरूप हैं। तक्षशिला के बारे में रामायण में बताया गया है, जो सबसे प्रिय हिंदू महाकाव्यों में से एक है जिसे पवित्र माना जाता है। भगवान राम के छोटे और प्रिय भाई भरत, जो भगवान विष्णु के अवतार थे, जिन्होंने इस शहर की स्थापना की थी। बाद में भरत ने इस शहर का नाम अपने पुत्र तक्ष के नाम पर रखा, जो पहले तक्ष खंडा सम्राट थे। एक अलग स्रोत के रूप में, तक्षशिला 'तक्षक' से जुड़ा है, जो संस्कृत में 'बढ़ई' के लिए है, और यह सर्प(नाग) के लिए एक स्टैंड-इन शब्द के रूप में

कार्य करता है, जो प्राचीन भारत के इंडो-ईरानी लोग थे। हिंदू महाकाव्य महाभारत के पहले कुछ अध्यायों में जनमेजय को कुरु शासक (कुरु राजा परीक्षित के पुत्र भी) के रूप में वर्णित किया गया है। 5वीं शताब्दी की शुरुआत में गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय के समय में फा-हिएन नामक एक चीनी बौद्ध तीर्थयात्री ने भारत की यात्रा की। 'पश्चिमी देशों के रिकॉर्ड' यात्रा कार्यक्रम में एक अन्य चीनी बौद्ध तीर्थयात्री ह्वेनत्सांग ने 630 ईस्वी में के हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान तक्षशिला की अपनी यात्रा के बारे में लिखा था। तक्षशिला का दौरा करने के बाद, फा-हिएन ने बताया कि शहर के नाम का अर्थ है 'सिर काटना।' उन्होंने कहा कि 'जातक कथाओं' की सहायता से इस स्थान के नाम की उत्पत्ति इस प्रकार थीरु पुष्प या चंद्रप्रभा के रूप में अपने पूर्व अवतार के दौरान भगवान बुद्ध ने एक हिंसक शेर को खिलाने के लिए अपना सिर काट दिया था। इतिहास से ज्ञात होता है कि हजारों वर्ष पहले जैन तीर्थंकर ऋषभ ने तक्षशिला की यात्रा की थी, जिसे तक्षशिला के नाम से भी जाना जाता है। चौथी सदी ईसा पूर्व में तक्षशिला का शासक आम्भी था इसी के शासन काल में यूनानी सेनापति सिकंदर भारत पर आक्रमण किया था जिसमें आम्भी ने सिकंदर से संधि कर ली तथा दोनों मिलकर पंजाब के राजा पोरस पर आक्रमण किए। जो ज़ेलम के युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस विश्वविद्यालय प्रमुख शिक्षकों में चाणक्य अथवा विष्णुगुप्त का नाम महत्वपूर्ण है जिन्होंने नन्द राजवंश का पतन करवाने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई यहाँ के शिष्यों में जीवक और चरक इत्यादि थे, जिनका नाम औषधि विज्ञान, आयुर्वेद के वैद्यों में प्रसिद्ध है।

बौद्ध शिक्षा और संस्कृति का प्रसिद्ध केंद्र नालंदा विश्वविद्यालय सातवीं शताब्दी में प्रमुखता से उभरा। नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत का एक महत्वपूर्ण आवासीय विश्वविद्यालय था, इस विश्वविद्यालय की स्थापना चौथी – पांचवी सदी ई. के गुप्त राजवंश के शासक कुमारगुप्त प्रथम (महेंद्रित्य) ने किया था, इस काल में भारत की धार्मिक –आर्थिक स्थिति उन्नत थी इन्होंने ही नालंदा में एक महाविहार का निर्माण करवाया जो उस समय के एक महत्वपूर्ण शिक्षा के केंद्र में उभरा, यह प्राचीन भारत का प्रथम आवासीय विश्वविद्यालय था। इस विश्वविद्यालय में प्रमुख रूप से बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जाती थी तथा इसके साथ-साथ हिन्दू और जैन धर्म की भी शिक्षा दी जाती थी एवं यहाँ पर धार्मिक –कर्मकांड, औषधि विज्ञान, दर्शन, इतिहास एवं संस्कृति इत्यादि में विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे। सातवी सदी में हर्षवर्धन के शासन काल में आए चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी नालंदा विश्वविद्यालय का भ्रमण किया और यहाँ पर शिक्षा भी ग्रहण की यह अपने यात्रा विवरण "सी-युकी" में लिखते हैं कि इस विश्वविद्यालय में सभी विषयों की शिक्षा दी जाती थी, यहाँ पर अनेक विशाल भवन का निर्माण किया गया था यहाँ का पुस्तकालय इतना बड़ा था की पुरे संसार में ऐसा कोई बड़ा पुस्तकालय नहीं था। यहाँ की पुस्तकालय में सभी विषयों की पुस्तकें उपलब्ध थी। इस विश्वविद्यालय में विभिन्न देशों के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे, ह्वेनत्सांग ने भी यहाँ पर रह कर बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त की थी और उन्होंने इस विश्वविद्यालय के प्रवेश सम्बंधित नियमों का उल्लेख भी किया है यहाँ पर जो भी इच्छुक विद्यार्थी प्रवेश लेने के लिए आता था उससे विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर प्रवेश परीक्षा सम्बंधित द्वारपाल द्वारा विद्यार्थियों से प्रश्न पूछा जाता था तथा उचित उत्तर देने पर प्रवेश दिया जाता था। नालंदा विश्वविद्यालय पूर्व मध्य काल तक शिक्षा का एक अग्रणी संस्थान के रूप में जाना जाता था। इस संस्थान का पतन बारहवीं सदी में मुस्लिम आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को आग के हवाले कर दिया।

वल्लभी विष्वविद्यालय बहुत समय पहले एक बहुत प्रसिद्ध विष्वविद्यालय था। यह वास्तव में लंबे समय तक 600 ईस्वी से 1200 ईस्वी तक प्रसिद्ध था। न केवल गुजरात में बल्कि अन्य दूर-दराज के इलाकों में भी कई अलग-अलग जगहों के लोग इसके बारे में जानते थे। वल्लभी विष्वविद्यालय गुजरात के भावनगर में स्थित था, जो बौद्ध शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। इस विष्वविद्यालय का निर्माण मैत्रक के राजा भट्टारक ने करवाया था। इसका एक दिलचस्प पहलू यह है कि बौद्ध धर्म का केंद्र होने के साथ-साथ यहां वैदिक प्रथाओं और ब्राह्मण ग्रंथ एवं साहित्य की शिक्षा भी दी जाती थी। इस विष्वविद्यालय की सबसे खूबसूरत बात यह थी कि यहां बिना किसी भेदभाव के एक राजा का पुत्र और एक निर्धन व्यक्ति का पुत्र एक साथ बैठकर शिक्षा ग्रहण करते थे। वल्लभी विष्वविद्यालय जो हीनयान बौद्ध धर्म का केंद्र था, यहाँ पर बौद्ध धर्म की शिक्षा के साथ-साथ कृषि, सार्वजनिक प्रशासन, धर्म और कानून, चिकित्सा, वास्तु विज्ञान, अर्थशास्त्र और लेखांकन इत्यादि विषयों के लिए प्रसिद्ध था। यहां छात्र अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वे राज प्रशासन के क्षेत्र में भी अपना योगदान देते थे। यहां अधिकांश पाठ्यक्रमों की अवधि 10 वर्ष तक थी, जिसके लिए प्रत्येक पांच छात्रों पर एक शिक्षक की नियुक्ति की जाती थी। 7वीं सदी के मध्य में ह्वेनसांग ने यहां के बारे में बताया था कि यहां करीब 6000 छात्र एक साथ पढ़ते थे और उनके रहने के लिए 100 मठ स्थापित किये गये थे। कहा जाता है कि गुणमति और स्थिरमति दो प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान इस विष्वविद्यालय में पढ़ते थे। सोमदेव का कथासरित्सागर एक ब्राह्मण का वृत्तांत बताता है जिसने अपने बेटे को नालंदा या बनारस के बजाय वल्लभी भेजने का संकल्प लिया था। वल्लभी विष्वविद्यालय का अंत 775 ई. में माना जाता है जब अरबों ने वहां आक्रमण किया और यह लगभग पूरी तरह नष्ट हो गया, लेकिन मैत्रक वंश के उत्तराधिकारियों ने काफी दान देकर इसे सुरक्षित रखा, लेकिन 12वीं शताब्दी तक इसकी शैक्षणिक गतिविधियां धीमी पड़ गईं।

### शैक्षणिक गतिविधियाँ

#### शिक्षा का स्वरूप

भारत में प्राचीन जीवन दर्शन की उत्कृष्ट विशेषताएँ यह हैं कि यद्यपि संसार में भौतिक अस्तित्व का कोई विशेष महत्व नहीं है, फिर भी इस भौतिक संसार में कर्म के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जाता है। कर्म का सिद्धांत भारतीय जीवन और शिक्षा प्रणाली में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कार्य या कर्म मानव जाति की मुक्ति के लिए नहीं होना चाहिए। यह कर्म के सिद्धांत और प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली का आदर्श रहा है। इसलि किसी व्यक्ति के लिए भक्ति का अंतिम उद्देश्य ब्रह्म है, न कि यह संसार। भौतिक संसार मानव आत्मा की प्रयोगशाला है जहाँ व्यक्ति को आत्मविकास के लिए व्यवस्थित शिक्षा प्राप्त करनी होती है। भारत की प्राचीन आर्य संस्कृति आत्म-विकास के लिए शिक्षा के नैतिक आधार के रूप में सादा जीवन और उच्च विचार पर सबसे अधिक जोर देती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक रूप से बाध्य किया गया है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पूरी तरह से भारतीय ज्ञानमीमांसा और दार्शनिक परंपराओं के आधार पर बनाई गई थी। जीवन और संसार की क्षणभंगुरता का विचार अंतिम मृत्यु का विचार और सामान्य सुखों की निरर्थकता ने उन्हें एक अद्वितीय दृष्टिकोण दिया था। ये चार विचार संपूर्ण शैक्षणिक विरासत की नींव के रूप में कार्य करते हैं। इस प्रकार, भारतीय ऋषियों ने स्वयं को एक अति-संवेदनशील दुनिया और आध्यात्मिक ऊर्जा के अध्ययन के लिए समर्पित कर दिया, और उसके अनुसार अपने जीवन को आकार दिया। स्कूली शिक्षा का अंतिम लक्ष्य चिन्ति-वृत्तिनिरोध (तथाकथित ठोस दुनिया से जुड़ी

मानसिक गतिविधियों पर नियंत्रण) के रूप में सामने आया। हालाँकि, शिक्षा ने छात्र के संपूर्ण सुधार के लिए उसकी क्षमताओं के विकास को नजरअंदाज नहीं किया। भारत में प्राचीन काल के दौरान छात्र अपने प्रशिक्षक के समीप बैठकर भौतिक दुनिया के शोर और विकर्षणों से दूर, सुंदर प्राकृतिक परिवेश के बीच, श्रवण और ध्यान द्वारा जीवन की सभी सूक्ष्म कठिनाइयों को समझ लेते थे। वह केवल किताबी शिक्षा तक निर्भर न होकर, बल्कि लोगों के साथ सीधे संपर्क के माध्यम से दुनिया और समाज की व्यावहारिक समझ विकसित करते थे। विद्यार्थी को स्वयं सर्वोच्च सत्य का अनुभव करने और इस प्रकार समाज को आकार देने के लिए तैयार करने का प्रयास किया जाता था। एवं विद्यार्थियों के सामाजिक विकास एवं जिम्मेदारियों के निर्वहन से सम्बंधित शिक्षा प्रदान की जाती थी, जैसे शिष्य को शिक्षक के घर पर रहकर अध्ययन करना, शिक्षक के लिए ईधन-लकड़ी इकट्ठा करना, पानी उपलब्ध कराना और अन्य घरेलू कर्तव्यों का पालन करना उसकी पवित्र जिम्मेदारी थी। इस तरह, उसे न केवल घरेलू शिक्षा मिलेगी, बल्कि वह श्रम गरिमा और सामाजिक जिम्मेदारी का व्यावहारिक पाठ भी सीखेगा। विद्यार्थी अपने शिक्षकों की गायों की देखभाल, पशुपालन, कृषि और डेयरी फार्मिंग में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। प्राचीन भारतीय शिक्षा सैद्धांतिक से कहीं अधिक थी; यह व्यावहारिक भी था। करके सीखने का मौजूदा सिद्धांत जैसा कि वर्तमान शिक्षा के रूप में समझा जाता है, प्राचीन भारत में शिक्षा हृदय और आत्मा में था। जीवन एक शैक्षिक प्रयोग के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता था, जहाँ से कई महत्वपूर्ण परंपराएँ उभर कर आयीं। महत्वपूर्ण रूप से प्राचीन भारत में शिक्षा वेद, उपनिषद, चिकित्सा, साहित्य, व्याकरण इत्यादि विधाओं के साथ-साथ जीवन निर्वाण एवं विद्यार्थियों में नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास के लिए भी दी जाती थी।

#### विद्यालय का स्वरूप एवं आवासीय व्यवस्था

जातक कथाएँ चीनी विद्वान द्वारा दिए गए वृत्तांत, साथ ही अन्य स्रोत हमें बताते हैं कि राजाओं और समाज ने शिक्षा को बढ़ावा देने में सक्रिय रुचि ली। परिणामस्वरूप अनेक प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र अस्तित्व में आये। इस अवधि के दौरान विकसित होने वाले सबसे उल्लेखनीय विष्वविद्यालयों में तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, विक्रमशिला, ओदंतपुरी और जगदला में स्थित थे। ये विष्वविद्यालय विहारों के संबंध में विकसित हुए। बनारस, नवदीप और कांची में मंदिरों के संबंध में विकास हुआ और वे उन स्थानों पर सामुदायिक जीवन के केंद्र बन गए जहां वे स्थित थे। ये संस्थान उन्नत स्तर के छात्रों की जरूरतों को पूरा करते थे। ऐसे छात्र उच्च शिक्षा केंद्रों से जुड़ते थे और प्रसिद्ध विद्वानों के साथ आपसी विचार-विमर्श और वाद-विवाद द्वारा अपना ज्ञान विकसित करते थे इतना ही नहीं, कभी-कभी राजा द्वारा एक सभा में भी बुलाया जाता था जिसमें देश के विभिन्न विहारों और विष्वविद्यालयों के विद्वान मिलते थे, बहस करते थे और अपने विचारों का आदान-प्रदान करते थे। तक्षशिला विष्वविद्यालय प्राचीन भारतीय विष्वविद्यालयों में से सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण विष्वविद्यालय के रूप में स्थापित हुआ यह विष्वविद्यालय प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा एवं शोध आदि क्षेत्रों में विष्वविख्यात था तक्षशिला विष्वविद्यालय के भवन ज्यादा विकसित नहीं थी यहाँ शिक्षा एक स्थान पर न होकर कई स्थानों पर होता था अर्थात तक्षशिला शहर के कई स्थानों पर होती थी। जातक कथाओं से प्राप्त होता है कि यहाँ के भवनों में आधुनिक विद्यालयों की भांति सुविधा होती थी जैसे यहाँ के भवनों के भीतर पत्थर के बेंच भी प्राप्त हुए हैं एवं विद्यालयों के बाहर बड़े- बड़े खेल के मैदान होते थे यहाँ पर विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए आवासीय व्यवस्था नहीं थी। पर यहाँ मठ होते थे जहाँ दूर के

विद्यार्थियों को रहने की व्यवस्था थी पर यह सीमित थी। यहाँ के संस्थानों में शिक्षा सिद्धांत के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा भी दी जाती थी, उदाहरण स्वरूप चन्द्रगुप्त मौर्य जब चाणक्य को दिखा तब वह एक खेल खेल रहा था जो शासन एवं न्याय व्यवस्था से सम्बंधित था। संस्थानों में वर्ण व्यवस्था का प्रचलन था पर वह कर्म के आधार पर था। यहाँ विद्यार्थियों की प्रवेश सम्बंधित बहुत ही कठोर नियम थे जातक कथा एवं ह्वेनत्सांग के विवरणों से प्राप्त होता है कि यहाँ 10 में से केवल 3 विद्यार्थियों को प्रवेश मिलता था। मौर्य काल में यहाँ 3000 विद्यार्थी एवं 300 शिक्षक अध्ययन और अध्यापन करते थे। नालंदा विष्वविद्यालय प्राचीन भारत का दूसरा और विशालीय आवासीय विष्वविद्यालय स्थापित हुआ एवं यह विष्व का पहला विष्वविद्यालय था जो पूर्णतः आवासीय था। अपनी विकसित स्थिति में इसमें लगभग 10,000 छात्र और 2,000 शिक्षक थे। सातवीं शताब्दी में ह्वेन त्सांग नालंदा विष्वविद्यालय पहुंचे, जिसमें 10,000 छात्र और 1510 व्याख्याता थे। इस विष्वविद्यालय में कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस और तुर्की के साथ-साथ भारत के अन्य क्षेत्रों से छात्र अध्ययन करने आते थे। विशेष शिक्षा प्राप्त करने वाले नालन्दा स्नातक बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए निकल पड़े। नौवीं से बारहवीं शताब्दी तक यह विष्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध था। यह विष्वविद्यालय बहुत ही व्यवस्थित तरीके से बनाया गया था और एक बड़े क्षेत्र को कवर करता था। यह वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण था। पूरा परिसर एक बड़ी दीवार से घिरा हुआ था जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। वहाँ इमारतों की कतारें थीं जहाँ भिक्षु रहते थे, और उनके सामने कई आकर्षक इमारतें और मंदिर थे। मंदिरों में भगवान बुद्ध की सुंदर मूर्तियाँ थीं। मुख्य विद्यालय में सात बड़े कमरे और कई अन्य छोटे कमरे थे। यहां व्याख्यान होते थे। अब तक उन्हें भिक्षु भवनों में से केवल तेरह ही मिले हैं, लेकिन और भी हो सकते हैं। इमारतों में एक से अधिक मंजिलें होती थीं और सोने के लिए विशेष स्थान होता था। वहाँ लैंप, किताबें और अन्य चीजें रखने के लिए भी स्थान थे। प्रत्येक भवन के आँगन में एक कुआँ होता था। बड़ी इमारतों के अलावा, वहाँ दस मंदिर, कई प्रार्थना कक्ष, अध्ययन कक्ष और सुंदर बगीचे और झीलें थीं। विष्वविद्यालय की प्रबंधन समिति वर्तमान विष्वविद्यालयों से मिलती-जुलती थी यहाँ पर बौद्ध भिक्षुओं ने पूरे विष्वविद्यालय का प्रशासन करने के लिए एक कुलपति या प्रधान आचार्य का चुनाव किया जाता था। सभी योजनाएँ कुलपति द्वारा दो सलाहकार समितियों के सहयोग से विकसित की जाती थी। पहली समिति शैक्षिक और पाठ्यक्रम मामलों की प्रभारी थी, जबकि दूसरी समिति विष्वविद्यालय की वित्त प्रणाली और प्रशासन की प्रभारी थी। यह समिति उन दो सौ गाँवों की उपज और आय की प्रभारी थी, जो विष्वविद्यालय को दान में दिये गये थे। इससे हजारों छात्रों को भोजन, कपड़े और आवास उपलब्ध कराया जा सका। विष्वविद्यालय में प्रथम द्वितीय और तृतीय श्रेणी के शिक्षकों की योग्यता के आधार पर तीन कक्षाएँ थीं। शिलापत्र, धर्मपाल, चन्द्रपाल, गुणमती, और तिरमती नालन्दा के प्रसिद्ध शिक्षक थे। 7वीं शताब्दी में ह्वेन त्सांग के शासनकाल के दौरान महान शिक्षक और विद्वान शीलभद्र इस विष्वविद्यालय के प्रमुख थे। यहाँ विद्यार्थियों का प्रवेश परीक्षा अत्यंत कठिन थी और केवल उत्कृष्ट विद्यार्थियों को ही प्रवेश दिया जाता था। उन्हें तीन स्तरों की कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ा। यह उस समय दुनिया का पहला ऐसा प्रथम उदाहरण था एवं संघ के कानूनों और सिद्धांतों का पालन करना महत्वपूर्ण था। एवं वल्लभी विष्वविद्यालय भी नालंदा विष्वविद्यालय के उपरांत ही बना था यहाँ पर मैत्रक राजाओं का शासन था यहाँ पर बौद्ध धर्म के हीनयान संप्रदाय की शिक्षा विशेष रूप से दी जाती थी। इसके अलावा अन्य चिकित्सा, ब्राह्मण साहित्य, कर्मकांड एवं कानून इत्यादि की भी

शिक्षा दी जाती थी। इस संस्थान में विद्यार्थियों को रहने के लिए आवासीय व्यवस्था थी इसके साथ-साथ शिक्षकों के लिए भी आवास सुविधा थी यहाँ के शासक शिक्षा के प्रबल संरक्षक थे। ये विष्वविद्यालय को आवश्यकतानुसार अनुदान भी प्रदान करते थे इसके साथ-साथ यहाँ शिक्षकों को शासन व्यवस्था में सहयोग लेते थे। यहाँ पर भारत एवं भारत के बाहर से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे, ह्वेनत्सांग ने भी अपने विवरण में लिखता है कि यहाँ पर कानून की शिक्षा इतनी बेहतर थी की उत्तर भारत के राजाओं के पुत्र यहाँ रहकर अध्ययन करते थे।

### शिक्षा की पाठ्यक्रम

प्राचीन भारतीय विष्वविद्यालयों में शैक्षिक संगठन के सन्दर्भ में पाठ्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह प्राचीन भारतीय शिक्षा में विशेष रूप से लागू होती है। लोगों का दैनिक जीवन पाठ्यक्रम निर्धारित करता है। प्राचीन भारत में शैक्षिक पाठ्यक्रम कई चरणों से होकर विकसित हुआ। ज्ञान और समाज की जटिलताओं ने पाठ्यक्रम विकास को प्रभावित किया। पाठ्यक्रम विकास की प्रकृति व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों आवश्यकताओं द्वारा निर्धारित की गई थी। इसके परिणामस्वरूप प्राचीन भारतीय शिक्षा के स्तरों पर पाठ्यक्रम पैटर्न अलग-अलग हो गए। इस प्रकार पाठ्यक्रम स्थिर होने के बजाय गतिशील था। एक अच्छा पाठ्यक्रम बनाने का प्राथमिक लक्ष्य छात्रों को शारीरिक और मानसिक रूप से बढ़ने में मदद करना था। पाठ्यक्रम में चार वेद, छह वेदांग, उपनिषद, दर्शन, पुराण और तर्क शास्त्र शामिल हैं। छह वेदांग शिक्षा, छंद, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प थे, जबकि दर्शन न्याय, वैशेषिक, योग, वेदांत, सांख्य और मीमांसा थे। उस समय बीजगणित, ज्यामिति और व्याकरण को भी अधिक महत्व दिया गया था। पाणिनि उस समय व्याकरण पर अपने काम के लिए प्रसिद्ध थे। बौद्ध पाठ्यक्रम में विनयपिटक, अभिधम्मपिटक और सुत्तपिटक शामिल हैं। चिकित्सा के अलावा वेदों को भी महत्वपूर्ण माना जाता था।

### गुरु शिष्य परंपरा

तक्षशीला विष्वविद्यालय प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली गुरु-शिष्य परम्परा के सिद्धांतों पर फली-फूली, एक प्रतिष्ठित संस्था थी, जिसमें शिक्षा सीधे शिक्षक (गुरु) द्वारा छात्र (शिष्य) ग्रहण करता था। तक्षशीला विष्वविद्यालय जिसे उच्च शिक्षा के शुरुआती संस्थानों में से एक माना जाता है (लगभग 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व से 5वीं शताब्दी ईसवी तक), वर्तमान पाकिस्तान में स्थित तक्षशीला में भारत के विभिन्न हिस्सों और मध्य एशिया और चीन जैसे क्षेत्रों से छात्र आते थे। तक्षशीला में शिक्षा पारंपरिक कक्षाओं से आगे बढ़कर पेड़ों के नीचे खुले वातावरण में, मठों में और गुरुकुलों में फली-फूली। गुरु एक शिक्षक और आध्यात्मिक गुरु दोनों के रूप में कार्य करते थे, जो छात्र के बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास को प्रभावित करते थे। पाठ्यक्रम में वेद, चिकित्सा, राजनीति, दर्शन, सैन्य विज्ञान, साथ ही कला और शिल्प सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल थी। चाणक्य (कौटिल्य) और प्रतिष्ठित संस्कृत व्याकरणविद पाणिनि जैसे उल्लेखनीय विद्वान तक्षशीला से जुड़े थे। गुरु और शिष्य के बीच का सम्बन्ध आपसी सम्मान, प्रतिबद्धता और अनुशासन पर आधारित था। छात्र आमतौर पर गुरु के साथ रहते थे, दैनिक कार्यों में शामिल होते थे और चर्चाओं और वार्तालाप के माध्यम से सीखते थे। इस व्यक्तिगत व्यापक शैक्षिक दृष्टिकोण ने न केवल अकादमिक समझ को बढ़ावा दिया बल्कि नैतिक आचरण और सामाजिक जिम्मेदारी को भी बढ़ावा दिया। नालंदा विष्वविद्यालय प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा के एक प्रतिष्ठित केंद्र के रूप में विकसित हुआ। गुप्त काल के दौरान 5वीं शताब्दी ई. में स्थापित जिसने चीन, तिब्बत, कोरिया और श्रीलंका सहित

एशिया के विभिन्न हिस्सों से विद्वानों को आकर्षित किया। नालंदा के शैक्षिक लोकाचार का केंद्र गुरु-शिष्य (शिक्षक-शिष्य) परंपरा थी, जो व्यक्तिगत मार्गदर्शन, नैतिक शिक्षा और व्यापक विकास को प्राथमिकता देती थी। समकालीन संस्थागत ढाँचों के विपरीत, नालंदा में शैक्षिक दृष्टिकोण गुरुओं और शिष्यों के बीच घनिष्ठ पारस्परिक संबंधों पर निर्भर था। छात्र विशाल विष्वविद्यालय परिसर में रहते थे, विद्वान भिक्षुओं और विद्वानों के मार्गदर्शन में गहन अध्ययन, वाद-विवाद और चर्चाओं में भाग लेते थे। गुरु न केवल एक शिक्षक के रूप में बल्कि एक आध्यात्मिक गुरु और नैतिक मार्गदर्शक के रूप में भी काम करते थे। नालंदा में पेश किए जाने वाले विषयों में बौद्ध दर्शन, चिकित्सा, गणित, तर्कशास्त्र, व्याकरण और कला शामिल थे। आचार्य नागार्जुन, आर्यदेव और धर्मपाल जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों ने गुरु के रूप में कार्य किया, जिससे विष्वविद्यालय के बौद्धिक माहौल पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। इस परंपरा ने न केवल अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा दिया, बल्कि चरित्र विकास और सामाजिक जिम्मेदारी को भी प्रोत्साहित किया। नालंदा में गुरु-शिष्य प्रणाली ने पूरे एशिया में ज्ञान के संचरण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए एक मजबूत आधार स्थापित किया। वल्लभी विष्वविद्यालय गुरु न केवल अकादमिक शिक्षण में बल्कि शिष्य के नैतिक और आध्यात्मिक चरित्र को आकार देने में भी महत्वपूर्ण थे। इस व्यक्तिगत और वैयक्तिकृत शिक्षण दृष्टिकोण ने खुली चर्चा, संवाद और पूछताछ को बढ़ावा दिया, जिससे छात्रों को नैतिक मूल्यों के साथ-साथ आलोचनात्मक सोच विकसित करने में मदद मिली। विष्वविद्यालय ने बौद्ध दर्शन, कानून, राजनीति, व्याकरण, चिकित्सा और साहित्य पर ध्यान केंद्रित किया। गुणमती और रिथरमती सहित प्रतिष्ठित विद्वान और भिक्षु वल्लभी से जुड़े थे और इस पारंपरिक शैक्षिक ढाँचे के माध्यम से छात्रों की पीढ़ियों का मार्गदर्शन किया। वल्लभी में गुरु-शिष्य परंपरा ने भारत की बौद्धिक विरासत को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने सुशिक्षित विद्वानों के माध्यम से आसपास के क्षेत्रों में ज्ञान के प्रसार को सुगम बनाया।

### निष्कर्ष

तक्षशिला, नालंदा और वल्लभी विष्वविद्यालय प्राचीन भारत की विष्वविख्यात संस्थान थी, जिसमें शिक्षा के सर्वगुण परिलक्षित होते थे। इन संस्थानों की शैक्षिक प्रणाली एवं संगठन बहुत प्रचलित थी, जिसमें शिक्षा का स्वरूप, उद्देश्य, संस्थानों की संरचनात्मक स्थिति, उपयुक्त शैक्षिक वातावरण, विदेशी विद्यार्थियों का आकर्षक केंद्र के साथ-साथ गुरु-शिष्य परंपरा जो प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का प्रमुख केंद्र बिंदु है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को जीवन की परिणति के लिए तैयारी करना और जीवन की अपरिहार्य चुनौतियों के लिए लोगों के चरित्र को आकार देना तथा उनमें मानसिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार का विकसित करना महत्वपूर्ण लक्ष्य था।

### संदर्भ सूची

1. अल्तेकर, ए. एस. (1965). एजुकेशन इन एन्शियंट इंडिया, नंद किशोर एंड ब्रदर्स
2. बाशम, ए. एल. (1954). द वंडर दैट वॉज इंडिया. सिडगविक एंड जैक्सन।
3. गोयल, एस. आर. (1965). अ हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन: एंशियंट एंड मीडिएवल. आर्य बुक डिपो।
4. मुखर्जी, आर. के. (1969). एंशियंट इंडियन एजुकेशन: ब्राह्मणिकल एंड बुद्धिस्ट. मोतीलाल बनारसीदास
5. मजूमदार, आर. सी. (1971). हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन एंशियंट इंडिया. फर्मा केएलएम।

6. सिंह, आर. पी. (1972). प्राचीन भारत में शिक्षा. भारतीय विद्या भवन।
7. पाठक, वी. एस. (1997). प्राचीन भारतीय शिक्षा: एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण. मोतीलाल बनारसीदास
8. कुमार, के. (1998). मौर्योत्तर भारत में शिक्षा और समाज. विकास पब्लिशिंग
9. शर्मा, आर. (2012). गुरुकुल सिस्टम ऑफ एजुकेशन इन एंशियंट इंडिया. एटलांटिक पब्लिशर्स।
10. पथानिया, के. (2014). प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता. अभिजीत पब्लिकेशन्स।
11. सिंह, एम. पी. (2016). प्राचीन भारत में बौद्ध मठ शिक्षा. मोतीलाल बनारसीदास।
12. जोशी, के. (2017). एंशियंट इंडियन यूनिवर्सिटीज: तक्षशिला, नालंदा एंड वल्लभी. इंडियन बुक्स सेंटर।
13. तिवारी, आर. (2018). रोल ऑफ गुरुकुल एजुकेशन इन एंशियंट इंडिया. प्रतिभा प्रकाशन।
14. भूषण, एल. (2022). कल्चरल हेरिटेज ऑफ एंशियंट इंडियन एजुकेशन. मित्तल पब्लिकेशन्स।
15. पाटिल, वी. के., एवं पाटिल, के. डी. (2023). ट्रेडिशनल इंडियन एजुकेशन वैल्यू एंड न्यू एजुकेशन पालिसी, द जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 116(3), 225-234. <https://doi.org/10.1177/00220574211016404>
16. जोशी, एच. (2024). गुरुकुल सिस्टमरू ट्रेडिशन, वैल्यूज एंड मॉडर्न रेलिजेंस. ऑक्सफोर्ड इंडिया।
17. दुबे, पी. (2024). एंशियंट इंडियन एजुकेशन एंड इट्स कंटेम्पररी वैल्यू. ग्लोबल विजन पब्लिशिंग हाउस।
18. शर्मा, आर. (2025). टीचर-स्टूडेंट रिलेशनशिप इन एन्शियंट इंडिया एजुकेशन सिस्टम: इंटरनेशनल जर्नल फॉर इनोवेटिव रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी फील्ड, 11(2), 24-29 <https://www.ijirmf.com/teacher-student-relationship-in-the-ancient-indian-education-system-a-historical-perspective/>